

सर्वप्रथम माताजी के किसी भी मंदिर में जाकर श्रीफल एवं सुपारी तथा तीन लाल फूल (गुलाब, कनेर या अन्य कोई भी) भेंट करके उनको संपूर्ण नवरात्रि मे, घर में संपूर्ण रिद्धी-सिद्धी एवं शक्ति की संपूर्णता के साथ आने का निमंत्रण देना है। निमंत्रण के वक्त मंत्र जाप

**या देवी सर्वभुतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै- नमस्तस्यै-नमस्तस्यै नमोः नमः॥**

एक सौ आठ बार, 18 या 9 बार जाप करना है।

स्थापना :- शुभ मुहूर्त में करें।

विधि

कलश स्थापना :-

1. पंचभेली दाल या सप्तधान्य के ऊपर जल भरकर कलश रखना है।
2. कलश के ऊपर चुनरी लपेटना है।
3. चुनरी को लाल धागे से 3 बार या 9 बार लपेटना है।
4. कलश के अंदर पान या आम के 5 या 9 पत्ते डालना है।
5. कलश के उपर उल्टा श्रीफल रखना है।

अखण्ड ज्योति :-

1. जमीन अच्छी तरह से धोकर, साफ करने के बाद पंचभेली दाल या सप्तधान्य पर अखण्ड ज्योति का दीपक रखना है।
2. अखण्ड जोत के दीपक में भी लाल डोरा बांधना है।
3. अगर संभव हो तो गाय के घी का ही प्रयोग करें।
4. अखण्ड ज्योति मे ही माताजी की शक्ति प्रगट होती है। इसलिए अत्यंत श्रद्धापूर्वक साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करते हुए अपनी श्रद्धानुसार एवं सुविधा अनुसार, अवधि -साढ़े तीन घण्टे, संपूर्ण नवरात्रि या संपूर्ण पाक्षिक याने, पूनम तक की समयावधि के लिये माताजी को निमंत्रण ज्योति के माध्यम से देना है।

जो लोग अखण्ड ज्योति की स्थापना अपने घर में नहीं करना चाहते हैं तो, वे किसी भी माताजी के मंदिर में प्रज्वलित दीपक में श्रद्धानुसार तेल या घी का दान कर सकते हैं। जो लोग संपूर्णता के साथ पूजन-पाठ, हवन इत्यादि करना चाहते हैं वो जुवारें भी बौ सकते हैं।

प्रसाद एवं भोग :-

1. हलवा एवं खीर (प्रथम दिन और विसर्जन के दिन, कोई भी एक जरूरी है।)
2. सूखा मेवा
3. मिश्री प्रसाद
4. तीन प्रकार के फल (खट्टे नहीं हो)
5. लौंग, इलायची इत्यादि।

स्पंदन पारमार्थिक एवं सामाजिक उन्नयन समिति (रजि.)

28, विद्या नगर, उज्जैन (मप्र.) फ़ोन : 456010 मो. : +91-94248 70644

Facebook : sanjay-jain guruji, Twitter : sanjay-jain guruji

6. अन्य - चना, खीर, पूड़ी इत्यादि।

माताजी का भाग प्रसाद श्रद्धा से किसी कन्या अथवा गाय को खिला दें।

पाठ एवं मंत्रजाप - दुर्गा सप्तशती पाठ (दुर्गा, रक्षाकवच, अध्याय, कुंजी स्त्रोत क्षमापना इत्यादि)

मंत्रजाप - 1. क्लीं क्लीं स्वाहा 2. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे
3. ऊँ शिवशक्ति के रूपेण नमः स्वाहा 4. सर्वमंगल मांगल्यै
5. श्री दुर्गाये नमः 6. गायत्री मंत्र

मंत्रजाप साधन - 1. स्फटिक माला 2. रुद्राक्ष माला
3. कमलगट्टा माला 4. हाथों के द्वारा
5. रक्त चंदन माला से 6. लौंग इलायची द्वारा
7. अन्यसाधन द्वारा (श्रद्धानुसार)

आसन - लालरंग के आसन का प्रयोग करें। काला रंग प्रयोग नहीं लावें।

आहार चर्या - अपनी श्रद्धा एवं शक्ति अनुसार आप -

1. संपूर्ण नवरात्रि - निराहार
2. संपूर्ण नवरात्रि - फलाहार
3. संपूर्ण नवरात्रि - एकाहार (एक समय भोजन या एक समय फलाहार)

दर्शन - संपूर्ण नवरात्रि में दोनो समय, या कम से कम एक बार मंदिर में दर्शन जरूरी है।

विशेष -

1. माताजी की पूजा खाली कपाल याने की बगैर टीका अथवा टीकी लगाये नहीं करना चाहिए।
2. जिनके घर में स्थापना की हो, वो अतिआवश्यक होन पर ही शहर से बाहर जाये।
3. अगर जाना भी पड़े तो रात्रि विश्राम पुनः घर आकर ही करें। माताजी को पीठ दिखाना शुभ नहीं माना जाता है।
4. प्रतिदिन पूजन पश्चात क्षमा प्रार्थना अवश्य करें। जय माता दी।
5. एक घर में माताजी की तीन मूर्तियां नहीं होना चाहिए।
6. पूजन में बिल्वपत्र, बिल्वशाखा, त्रिशूल इत्यादि प्रयोग कर सकते हैं।
7. माताजी पूजन मे दूर्बा का प्रयोग ना करें।
8. पूजन स्थापना इत्यादि में लाल वस्त्र का प्रयोग करें।
9. माताजी स्थापना पूजन इत्यादि में मुख, उत्तरामुखी ना रखे।
10. दुर्गासप्तशती पाठ करने के पूर्व (1) कवच (2) अर्गला (3) कीलक अवश्य करें।
11. पाठ पश्चात क्षमा प्रार्थना पाठ अवश्य करें।
12. पाठ के अंत में सिद्ध कुंजिका स्त्रोत पढ़ने पर ही पाठ का संपूर्ण फल प्राप्त होता है।

स्पंदन पारमार्थिक एवं सामाजिक उन्नयन समिति (रजि.)

28, विद्या नगर, उज्जैन (मप्र.) फ़ोन : 456010 मो. : +91-94248 70644

Facebook : sanjay-jain guruji, Twitter : sanjay-jain guruji